Dr. Vijay Kaushik
M.Tech., Ph.D.
Director

RUSSIAN INDIAN HERITAGE ACADEMY
DNEPROPETROVSKY STREET, 7/1, 225
MOSCOW (RUSSIA)
Ph. : 0070-95-5026727
e-mail : riha@indorussia.ru
Website : www.indorussia.ru

प्रस्तावना

आज भौतिक विज्ञान का युग है। तर्क, विश्लेषण एवं प्रमाण आधुनिक विज्ञान के आधार हैं। **डॉ. तन्मय** ने धर्म के क्षेत्र में भी तीनों की आवश्यकता का गम्भीरता से अनुभव किया। **"मानव धर्म - का विज्ञान"** नामक पुस्तक उसी का सुपरिणाम है। लेखक ने सनातन धर्म में उल्लिखित प्राकृतिक सिद्धान्तों का आधुनिक विज्ञान से समन्वय करते हुए निम्न विषयों की बहुत ही सुन्दर विवेचना की है।

1. प्राकृतिक सिद्धान्त :-

सृष्टि सृजन, पालन एवं संहार हेतु ईश्वर ने विशिष्ट सिद्धान्तों की रचना की है, जो शाश्वत हैं। प्रकृति पूरी निष्ठा से निम्न सिद्धान्तों का पालन करती है।

(a) चक्र का सिद्धान्त/परिवर्तनशीलता एवं पुनर्जन्म का सिद्धान्त (b) अनुलोम एवं विलोमता का सिद्धान्त (c) कर्म का सिद्धान्त (d) मृत्युलोक एवं परलोक का सिद्धान्त (e) मुक्ति एवं मोक्ष का सिद्धान्त (f) यथा पिण्डे तथा ब्रह्माण्डे का सिद्धान्त (g) यज्ञमय जीवन यापन अर्थात् निष्काम सेवा का सिद्धान्त (h) निर्गुण निराकार - अद्वैत उपासना (एकेश्वरवाद) (i) सगुण साकार - द्वैत उपासना (अनेकेश्वरवाद)।

उपरोक्त सिद्धान्तों की वैज्ञानिक व्याख्या लेखक द्वारा किया गया अभूतपूर्व एवं सराहनीय प्रयास है।

2. प्रकृति में स्थित देव शक्तियों एवं मानव में स्थित दुष्प्रवृत्तियों का प्रतीकीकरण एवं मानवीकरण :-

प्रतीकीकरण एवं मानवीकरण के सिद्धान्त की खोज 'गायत्री मंत्र' के द्वारा हुई। वस्तुतः यह आधुनिक विज्ञान की भाषा में डिजिटल तकनीक (Digital Technology) ही है। ***प्रतीकीकरण एवं मानवीकरण द्वारा सगुण-साकार (द्वैत) उपासना के सरल मार्ग का विकास हुआ तथा मानव की दुष्प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इस विज्ञान का रहस्योद्घाटन करके लेखक ने एक अभिनव एवम् प्रशंसनीय कार्य किया है।***

3. परमात्मा का साक्षात्कार :-

दृश्यमान जगत चुम्बकीय विद्युत तरंगों के घनीभूत होने से निर्मित होता है। अतः परमात्मा के इच्छित स्वरूप का साक्षात्कार इसी प्रक्रिया का परिणाम है।

4. Dark (अदृश्य) Energy, Dark (अदृश्य) Matter एवम् दो सौ अरब आकाशगंगाओं द्वारा सतत परिक्रमा :-

प्राचीन ऋषियों के अनुसार विज्ञान द्वारा खोजी गयी इस ताजा तस्वीर को डिजिटल (प्रतीकों) की भाषा में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा आयोजित विश्व पटल पर हो रहा महारास है।

ॐ एवं नारायण ध्वनियों की उत्पत्ति आकाशगंगाओं की गतिशीलता तथा एलेक्ट्रॉन तारों (सूर्यों) के परिभ्रमण से होती है।

5. मानव - एक रोबोत :-

प्रत्येक मानव ईश्वर द्वारा निर्मित एक रोबोत जैसा है, जिसका अच्छा अथवा बुरा व्यवहार उसके अन्तर में निहित कम्प्यूटर डिस्क (संस्कारों) के अनुसार होता है। यह कम्प्यूटर डिस्क (संस्कारों) का निर्माण मानव स्वतः करता है।

6. पाप एवम् पुण्यों का लेखा-जोखा :-

मानव कृत पाप एवम् पुण्य कर्मों का लेखा-जोखा मानव के अन्तर में निहित कम्पयूटर (चित्त) द्वारा स्मृतियों के रूप में बड़ी सूक्ष्मता से संगृहीत होता रहता है। पाप कर्म से प्राण शक्ति का क्षय होता है तथा चित्त की आवृत्ति (frequency) निम्न और पुण्य कर्मों से उच्च स्तर की आवृत्ति का निर्माण होता है।

7. कर्मफलों का सृजन :-

प्रत्येक मानव का कम्प्यूटर (चित्त) विराट (आकाशगंगा) के सुपर कम्प्यूटर (विष्णु बल) से जुड़ा होता है। इस प्रकार दोनों कम्प्यूटरों के संयोग से मानव जीवन में घटनाओं एवम् चार प्रकार के कर्मफलों का सृजन होता है।

8. भावी योनि का निर्धारण एवम् जन्म-मरण का चक्र :-

सम्पूर्ण जीवन की स्मृतियों (पाप एवम् पुण्य कर्मों) का कम्प्यूटरीकृत परिणाम विशिष्ट प्रवृत्ति (tendency) का निर्माण करता है तथा मृत्यु के समय यही कम्प्यूटरीकृत प्रवृत्ति भावी योनि का निर्धारण करती है।

मानव कम्प्यूटर (चित्त) में जब तक एक भी स्मृति (वासना) शेष रहती है, मानव का जन्म-मरण का चक्र घूमता रहता है।

9. सृष्टि का सृजन :-

सृष्टि अनादि है। इसका न कभी सृजन हुआ है और न ही कभी सम्पूर्ण विनाश होगा। किसी एक आकाशगंगा के निर्माण एवम् विघटन की प्रक्रिया चुम्बकीय विद्युत तरंगों (Electro-magnetic Waves) का निम्न एवम् उच्च आवृत्तियों में परिवर्तन मात्र है।

10. जीवात्माओं का सृजन :-

सभी जीवात्माओं सहित मानवों का पृथ्वी पर अवतरण का तात्पर्य उनका निम्न आवृत्तियों में आ जाना है।

11. स्वर्ग - नरक एवं मुक्ति तथा मोक्ष :-

जीवात्मा द्वारा सूक्ष्म तरंगों के रूप में सुखद अथवा दुःखद कर्मफलों का अनुभव करना स्वर्ग एवं नरक है। प्रकाश रूप धारण करके वैकुण्ठ में आनन्दित रहना मुक्ति तथा सूक्ष्म शरीर का सम्पूर्ण रूप से भगवान शिव में विलीन हो जाना मोक्ष है।

12. होम्योपैथी :-

उच्चतर आवृत्तियों (frequencies) से सम्पन्न होम्यो औषधियों द्वारा रोगोपचार होने पर निरोग अवस्था की प्राप्ति सम अवस्था को प्राप्त करना है। ***'प्राण-विज्ञान'*** की समझ इस उपचार विधि को समझने में सहायक है।

13. धर्म का स्वरूप :-

प्रकृति में सर्वत्र ***सत्यनिष्ठा, अनुशासन (तप), निष्काम सेवा*** एवम् ***दानशीलता*** शाश्वत रूप से विद्यमान है, यही धर्म का सच्चा स्वरूप है।

14. वेद के उद्देश्य :-

मोक्ष प्रवण समाज रचना (ऋषि तन्त्र) द्वारा ही वेद के तीनों उद्देश्यों - (a) स्वस्थ और सुखी जीवन (b) सुखद मृत्यु एवं (c) मृत्यु के पश्चात् मोक्ष प्राप्ति सम्भव है।

15. ईश्वर प्राप्ति :-

योग साधना (धारणा, ध्यान एवम् समाधि) ईश्वर प्राप्ति अर्थात् शिव बनने का मार्ग है।

16. काल गणना :-

काल की छोटी से छोटी इकाई 'त्रुटि' से लेकर 'मनवन्तर' तक की गणना विज्ञान सम्मत तथा अन्यतम है।

17. ज्योतिष :-

सम्पूर्ण गतिशील जगत में असंख्य ज्योतिर्पिण्ड हैं, जो मानव जीवन समेत पूरी सृष्टि को नियंत्रित एवम् संचालित करते हैं। इन पिण्डों के प्रभावों का सूक्ष्म अध्ययन ज्योतिष शास्त्र के अन्तर्गत किया गया है, जो विश्व में अद्वितीय है।

18. प्रमुख लेख :-

पुस्तक के भाग-तीन में निम्न विषयों पर की गयी वैज्ञानिक चर्चा ज्ञानवर्धक एवम् समाज में फैली भ्रान्तियों को दूर करने में सहायक होगी, ऐसी आशा है।

(i) मानव धर्म का आधार - गायत्री मंत्र (ii) प्रतीक-विज्ञान (iii) गंगा - आकाशगंगा का प्रतीक (iv) गो - मातृभूमि का प्रतीक (v) गोत्र-विज्ञान एवं (vi) मानव धर्म की समग्र दृष्टि - सत्यम् शिवम् सुन्दरम्

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है, कि इस पुस्तक को विज्ञान जगत में सम्मान प्राप्त हो तथा इसमें निहित ज्ञान समस्त भूमण्डल का मार्गदर्शन करे। आज विश्व में धर्म के क्षेत्र में सम्पूर्णता की सोच के अभाव में जो हिंसा और अशान्ति व्याप्त है, उसका शमन हो। सभी मानवों के मध्य प्रेम एवम् भ्रातृभाव का संचार हो। अस्तु !

MOSCOW : **(रामनवमी)**
Dated : 30th March 2004

(Dr. Vijay Kaushik)
Director